INTEGRATED NUTRITION AND HEALTH PROJECT [INHP] - III

स्वास्थ्य संपदा

Jan 2008 to March 2008

बात अपनी

कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर ने वर्ष 2002 – 03 से केयर इंडिया के सहयोग और मार्गदर्शन में एकीकृत पोषण और स्वास्थ्य परियोजना जिसे आई.एन.एच.पी. दो के नाम से भी जाना जाता है इस परियोजना का क्रियांवयन बालाद्याट जिले में प्रारंभ किया था। आगे चलकर संस्था को सिवनी जिले में भी इस परियोजना के क्रियांवयन का अवसर प्राप्त हुआ। इस समय संस्था दोनों जिलों में इस परियोजना के तीसरे चरण अर्थात आई.एन.एच.पी. 3 का क्रियांवयन कर रही है।

अपने आप में यह एक विशिष्ट परियोजना है जो कि सामान्य तौर पर अन्य परियोजनाओं से भिन्न है, क्योंकि जहॉ एक ओर यह पोषण और स्वास्थ्य के मुद्दों पर समुदाय में हस्तक्षेप करती है दूसरी ओर स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और सुनिश्चित कराने वाली संस्थाओं और विभागों को तकनीकी सहयोग प्रदान करती है।

केयर और सी.डी.सी. के लगभग 6 वर्षों के कार्यों को देखने के लिए भी विशेष दृष्टि और समझ की आवश्यकता है। संस्था ने कभी इस तरह के प्रयास भी नहीं किये कि किसी फोरम पर संस्था को अपने कार्यों को बताने का अवसर दिया जाये सीधे शब्दों में कह सकते हैं कि इस परियोजना से सरोकार नहीं रखने वाला वर्ग नहीं जान सकता कि केयर या सी.डी.सी. के कार्य और हस्तक्षेप किस तरह के हैं।

परियोजना में गहरे तक जुडे हुए संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने निरंतर गंभीरता और पूरे समर्पण के साथ कार्य किया है जिसके कुछ त्वरित परिणाम तो दिखायी देते हैं पर दीर्घकालिक परिणाम तो धीरे धीरे ही दिखायी देंगे।

इस मासिक पत्रिका का उद्देश्य है हमारे कार्यों को जानने वाले वर्ग का दायरा बढ़े जिसका लाभ हमें उनके अनुभवों और उनसे प्राप्त होने वाले प्रतिभावों से मिल पायेगा। सामान्यतः संस्था के मासिक और त्रैमासिक प्रतिवेदन संस्था और केयर के अपने सीखने समझने और अनुभवों के आदान प्रदान में ही सिमट कर रह जाता है।

संस्था प्रयास करेगी कि इस छोटे से प्रकाशन के माध्यम से हम दोनों जिलों के विशिष्ट प्रयासों को सभी के साथ बांटे, जो कि किसी ना किसी रूप में निरंतरता और स्थायित्व की दिशा में काम आ सके। संस्था दोनों जिलों में महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग और पंचायत विभाग के साथ निचले स्तर से उपर के स्तर पर कार्य करती है। जिसमें विभागीय प्रमुखों और सभी स्तर के स्टॉफ का पूरा सहयोग हमें प्राप्त होता है। आज पोषण और स्वास्थ्य के स्तर में निरंतर सुधार के लिए स्वास्थ्य और महिला बाल विकास विभाग काफी संवेदनशील है और समुचित हस्तक्षेप कर रहा है जिससे निश्चित ही आने वाले समय में हम जिले में बच्चों और महिलाओं की पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार देख पायेंगे। संस्था इस समय परियोजना की रणनीतियों के मुताबिक सिर्फ कुछ ही हिस्सों में कार्य कर रही है जहॉ वर्ष 2002 –03 में हम जिले की 10 प्रतिशत आंगनवाडी केंद्रों में कार्य करते थे आज परियोजना की परिपक्वता की स्थिति में बालाद्याट जिले के लांजी, बैहर और बालाद्याट विकासखंड और सिवनी जिले के लखनादौन और छपारा विकास खंड में कार्य कर रहे हैं। स्वास्थ्य संपदा के माध्यम से हम अपने अनुभवों, प्रयासों और सीख को आप तक पॅहुचाने का प्रयास करेंगे, क्योंकि बहुत से ऐसे प्रयास हैं जो शायद कभी किसी की जानकारी में ही नहीं आ पाते। आपकी प्रतिक्रियाओं इसे और बेहतर बना सकती हैं।

अमीन चार्ल्स, निदेशक, सी.डी.सी.

कलेक्टर सिवनी मान. श्री पी. नरहरि जिला स्तरीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

इस अंक में

पोषण और स्वास्थ्य दिवस	2
त्रैमासिक समीक्षा बैठक	2
अधिकारों की पैरवी	2
आहार प्रदर्शनि शिविर	3
स्वास्थ्य व्यवहार : रुझान	3
पोषण स्वास्थ्य और पंचायत	3
कुपोषण पर महिलाओं के प्रयास	4

अन्य हस्तक्षेप

- सिवनी में संपन्न जिला स्तरीय लोक कल्याण शिविर में संस्था की भागीदारी।
- मुस्कान शिविरों में परियोजना स्टॉफ ने परामर्श स्टॉल के माध्यम से गंभीर कुपोषित बच्चों के अभिभावकों को परामर्श दिया
- बालाद्याट जिले के लांजी विकासखंड में नयी आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण
- बालाद्याट और सिवनी जिले में परियोजना स्टॉफ द्वारा गुणवत्ता पूर्ण अन्नप्राशन का विधि प्रदर्शन

गूंगी मॉ करवा रही है सिर्फ स्तनपान

शिशु को 6 माह तक केवल स्तनपान का संदेश धीरे धीरे समुदाय में स्थायित्व प्राप्त करते जा रहा है। परियोजना के अंतर्गत संपन्न विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचलित गलत परंपराओं और व्यवहारों में बदलाव हेतु सामूहिक प्रयास किये गये जिसमें आंगनवाडी कार्यकर्त्ता, ए.एन.एम. और आशा जो कि समुदाय स्तर तक पॅहुच रखती हैं।

समुदाय में व्यवहार परिवर्तन की एक झलक विकास खंड छपारा के साल्हेगढ में दिखायी देती है। साल्हेगढ़ जो कि चमारी सेक्टर के अंतर्गत आता है इस गॉव की एक महिला चमरी/इंदु गर्भवती हुई तो उसने गर्भावस्था के दौरान ब्लेड, धागा, अस्पताल की पहचान, सूती कपडे तैयार रखे थे वह जन्म से ही गूंगी है अचानक प्रसव पीडा हुई और प्रसव घर पर ही हुआ चूँकि तैयारी पहले से थी इसलिये बच्चे को जन्म के बाद नहीं नहलाया गया, नाल साफ रखी गई, तुरंत स्तनपान कराया गया। ऑगनवाडी कार्यकर्ता अंजुम कुरैशी के द्वारा बताया गया कि महिला को जीवन की आशा भाग एक एव दो दिखा कर समझाया गया है दिनॉक 10.03.08 को सी.डी.सी. के विकासखंड समन्वयक ने इस गॉव के भ्रमण के दौरान देखा गया कि चमरी बच्चे को सिर्फ स्तनपान करा रही है बच्चे का नाम रोहित रखा गया है। इस तरह कार्यकर्ता एवं समुदाय के प्रयास तथा जीवन की आशा सचित्र पुस्तिका से समझाईश के प्रभाव से एक गूंगी महिला को समस्त बेहतर स्वास्थ्य व्यवहार अपनाते देखना अपने आप में सुखद अनुभूति है।

प्रीतम रजक विकासखंड समन्वयक, सी.डी.सी.

पोषण और स्वास्थ्य दिवसों का अवलोकन

प्रत्येक आंगनवाडी केंद्रों में प्रतिमाह आयोजित होने वाले पोषण और स्वास्थ्य दिवस अर्थात मंगल दिवस का अपना ही महत्व है, इस दिन उस गॉव में स्वास्थ्य सेवाएं समुदाय को प्रदाय की जाती हैं। आवश्यक होता है कि इन मंगल दिवसों का आयोजन पूर्व नियोजित हो जिसमें समुदाय के साथ साथ पंचायती राज संस्थाओं की भी भागीदारी हो क्योंकि यदि इस दिन कोई बच्चा या महिला किसी स्वास्थ्य सेवा से वंचित रह जाये तो उसे पूरे माह उस सेवा से वंचित रहना पडेगा क्योंकि फिर मंगल दिवस का आयोजन अगले माह ही होगा। साथ ही इस दिन मिलने वाली सेवाओं की गुणवत्ता का भी सवाल है। अतः संस्था जिन विकासखंडों में कार्य कर रही है वहॉ प्रयास किया जाता है कि कुछ केंद्रों का भ्रमण कर मंगल दिवसों की गुणवत्ता का आंकलन कर आंगनवाडी कार्यकर्त्ता, ए.एन.एम., पंचायत और समुदाय को फीडबैक दिया जावे जिससे मंगल दिवसों का गुणवत्तापूर्ण आयोजन सुनिश्चित हो सके। विगत तिमाही में परियोजना स्टॉफ ने बालाघाट जिले के तीन विकासखंड के 10 मंगल दिवसों का भ्रमण जिसके आंकलन से स्पष्ट हुआ कि कुछ क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

पोषण और स्वास्थ्य दिवस पर स्वास्थ्य सेवाएं

- सिवनी जिले के लखनादौन और छपारा वि.ख. में स्टॉफ ने 22 मंगल दिवसों का भ्रमण किया जिसमें प्रायः सभी केंद्रों पर सेवाएं तो प्रदान की गयीं पर कहीं ना कहीं गुणवत्ता का स्तर कमजोर रहा, तीन केंद्र ऐसे थे जहॉ तय दिवस पर मंगल दिवस का आयोजन नहीं हो पाया, सभी 22 केंद्रों पर आयरन और टी.टी. वेक्सीन उपलब्ध थी बाकि कुछ कुछ सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी, जैसे विटामिन ए, 11 केंद्रों पर और बी.सी.जीदृ 13 केंद्रों पर ही उपलब्ध था।
- इसी तरह बालाघाट विकासखंड में 10 मंगल दिवसों का भ्रमण करने पर ज्ञात होता है कि 7 केंद्रों पर तय दिवस पर मंगल दिवस का आयोजन किया गया, 10 में 7 केंद्रों पर महिलाओं की स्वास्थ्य जॉच की गयी।

इन स्थितियों से विभाग प्रमुखों को ससमय अवगत करा दिया जाता है जिस पर आवश्यक कदम उठाये जाते हैं।

त्रैमासिक समीक्षा बैठक : भोपाल

केयर द्वारा दिनॉक 23 और 24 मार्च को भोपाल में दो दिवसीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में सहभागी संस्थाओं द्वारा विगत तीन माह में की गयी गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण संस्थाओं द्वारा किया गया।

त्रैमासिक बैठक का संचालन केयर की राज्य प्रतिनिधि सुश्री प्रतिभा शर्मा द्वारा सीखने की विशिष्ट तरीकों को अपनाकर किया जिसमें हमारे पास ही उपलब्ध ज्ञान और जानकारी का कैसे बेहतर प्रयोग किया जाये। बैठक में पंचायती राज व्यवस्थाओं पर समर्थन के निदेशक डा.योगेश कुमार ने अपने विचार व्यक्त किये साथ ही केयर से श्री सोमेन ने भी एक सत्र का संचालन किया। परियोजना में आगामी 6 माह के लिए कार्यनीति तय की गयी जिसमें परियोजना के तहत किये गये कार्यों की निरंतरता कैसे बनी रही इस पर बेहतर

नियोजन किया गया । परियोजना के तहत संस्थागत वित्तीय प्रबंधन की प्रकियाओं पर श्री असलम और श्री सुंदर ने सत्र लिया और छोटे छोटे प्रबंधकीय मुद्दों पर चर्चा की । बैठक में संस्था के परियोजना स्टॉफ के साथ संस्था निदेशक श्री अमीन चार्ल्स ने भाग लिया। केयर के जिला कार्यकम अधिकारियों सुश्री मीनू भार्गव और श्री शशिकांत यादव ने भी बैठक के सफल संचालन में अपना योगदान दिया

अधिकारों की पैरवी

आई.एन.एच.पी. परियोजना के इस चरण में बात हो रही है लोगों के अधिकारों की पैरवी की, कुपोषण जैसी गंभीर समस्या जो कि सिर्फ स्वास्थ्य की समस्या नहीं है यह कहीं आर्थिक और कहीं सामाजिक समस्या है।

बहुपक्षीय समस्या से मुकाबले के लिए रणनीति भी उसी तरह बनाने की आवश्यकता है अतः बात भोजन के अधिकार की हो या सार्वजनिक वितरण प्रणाली की पहल तो करनी ही होगी।

आगे किये जाने वाले कार्यों में पैरवी परियोजना का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जो कि वर्तमान दौर की आवश्यकता भी है। समुदाय आधारित पैरवी को प्रभावी बनाने हेतु प्रयासों की शुरूआत की गयी है जिसमें विभिन्न पक्षों को शामिल किया जा रहा है। पंचायती राज महासंघ के साथ संयुक्त पहल संस्था द्वारा प्रारंभ की गयी है। स्थानीय सेवा प्रदाता संस्थाओं,

शिविरों में परामर्श सेवाएं

स्थानीय स्वशासी ईकाईयों की जवाबदेही की सुनिश्चितता के लिए पैरवी के प्रयास परियोजना के माध्यम से किये जा रहे हैं। स्वास्थ्य में समझाईश का अपना महत्व होता है अतः परियोजना हितग्राहियों की समझाईश पर विशेष बल देती है, हमारा प्रयास है हितग्राहियों को बेहतर समझाईश मिले।

आहार प्रदर्शन शिविर से पोषण स्तर में आया सुधार

दिसंबर 2007 से विकासखंड छपारा एवं ल खनादौन विकास खंड मे सेक्टर स्तर पर कुपोषण के वर्ममान स्तर मे कमी लाने एवं सामुदायिक सहभागिता को जोडने के उददेश्य से मार्च 2008 तक दोनों विकासखंडो में कुल 9 आहार प्रदर्शन शिविर का आयोजन किया गया। आयोजन के दौरान ग्राम स्तर पर उपस्थित समुदाय से प्रश्नोत्तरी कर पोषण एवं स्वास्थ्य व्यवहारों की जानकारी का स्तर जानने का प्रयास किया गया प्रश्नोत्तरी से उस ग्राम के लोगों की समझ के आधार पर पोषण एवं स्वास्थ्य व्यवहारों जैसे गर्भावस्था में देखभाल, नवजात शिशु की दे खभाल, एवं उपरी आहार की मात्रा, गुणवत्ता, बारंबारता के विषय पर प्रदर्शन के माध्यम से समझ बनाने का प्रयास किया गया।

ग्राम स्तर पर पंचायत प्रतिनिधि एवं मातृ सहयोगिनी समिति के सदस्यों के माध्यम से गोदभराई, अन्नप्राशन कार्यकम करवाकर इनका जुडाव करने का छोटा सा प्रयास संस्था कार्यकर्ताओं के द्वारा किया गया साथ ही आंगनवाडी कार्यकर्ताओं के द्वारा आयोजित मंगल दिवस कार्यकम में गुणवत्ता लाने के लिये इनकी भागीदारी सुनिश्चित की गई।

आहार प्रदर्शन शिविर किये गये केन्द्रों के पोषण स्तर में प्रदर्शन के समय एव वर्तमान स्थिति में आये अंतरो का आंकलन संस्था कार्यकर्ता द्वारा मार्च 2008 में छपारा ब्लाक की स्थिति को देखा गया पॉच केन्द्रों की स्थिति में लगभग सभी केन्द्रों पर सामान्य पोषण स्तर में सुधार देखा गया। जिसे निम्न आंकलन के आध ाार पर देखा जा सकता है।

आहार प्रदर्शन से केंन्द्रवार आये परिवर्तन

केन्द्र का नाम	अभियान के दौरान	वर्तमान की स्थिति	अंतर
बीजादेवरी	34%	47.54%	+13.54%
तिलीपानी	40%	42.10%	+2.10%
पौंडी	60%	73.01%	+13.01%
देवरीकला.1	25%	34.02%	+9.02%
देवरीकला.2	14%	43.63%	+29.63

परियोजना के अंतर्गत छोटे छोटे प्रयास

स्वास्थ्य व्यवहारों की स्थिति : रूझान विकासखंड छपारा एवं लखनादौन

परियोजना के अंतर्गत स्टॉफ निरंतर भ्रमण के माध्यम से समुदाय में स्वास्थ्य व्यवहारों का आंकलन करते हैं। भ्रमण में स्वास्थ्य व्यवहारों के आंकलन के लिए केयर द्वारा विकसित आंगनवाडी केंद्र आंकलन प्रपत्र का प्रयोग किया जाता है। एक माह में एकत्रित किये गये आंकडों का विश्लेषण किया जाता है जिसमें हितग्राहियों से लिए गये साक्षात्कार और अवलोकन को आधार बनाया जाता है। इन आंकडों से स्वास्थ्य व्यवहारों में आ रहे परिवर्तनों का रूझान पता चलता है, इस ग्राफ में विगत जनवरी से मार्च 2008 के दौरान छपारा और ल खनादौन के 82 हितग्राहियों से किये गये साक्षात्कार के आधार पर व्यवहारों को दे खा गया है। इस परिस्थिति को केवल रूझान के रूप में देखा जाता है इन्हें समुदाय में स्थापित हो चुके व्यवहारों के रूप में नहीं दे खा जाता क्योंकि परियोजना के अंतर्गत जमा किये गये आंकडे काफी कम होते हैं। और ये आंकडे किसी विकासखंड या जिले की स्थिति को प्रमाणित करने के लिए काफी नहीं है। परियोजना इनका प्रयोग सेक्टर और बी.एल.ए. सी. में विभागीय स्टॉफ की क्षमतावृद्धि के रूप में देखा जाता है।

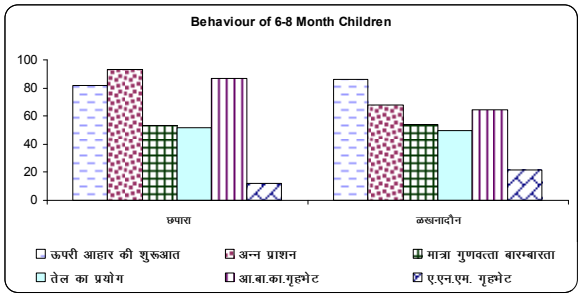

पोषण और स्वास्थ्य पर पंचायतों का सशक्तिकरण : बालाघाट

पंचायतें ग्राम्य विकास की प्रमुख संस्था है जानकारियों के आभाव में पंचायतों ने स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे को कभी अपने विकास के एजेंडे में शामिल ही नहीं किया। कभी पंचायतें महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर चिंतित दिखायी नहीं दीं, वजह है कभी पंचायत प्रतिनिधियों के संज्ञान में इस मुद्दे को लाया ही नहीं गया।

परियोजना में इस महत्वपूर्ण ईकाई को पोषण और स्वास्थ्य के मुद्दे पर संवेदनशील बनाने और आवश्यक हस्तक्षेप के लिए तैयार करने का प्रयास प्रारंभ किया है जिसके अंतर्गत प्रथम चरण में पंचायत प्रति. निधियों का प्रशिक्षण पंचायत स्तर और विकासखंड स्तर पर किया गया जिसके काफी सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। पर इस तरह के परिणाम काफी बिखरे हुए प्रतीत होते थे अतः संस्था ने बैहर और लालबर्रा में 10 –10 पंचायतों के दो क्लस्टर का चयन किया है जिसमें पंचायतों के साथ सघन रूप से कार्य के प्रयास किये जा रहे हैं जिससे पंचायतें वास्तविक रूप में अपनी जिम्मेदारियों का निवर्हन करने में सफल हो सकें।

पंचायत प्रतिनिधियों का उन्मुखीकरण
लालबर्रा, बालाघाट

INTEGRATED NUTRITION AND HEALTH PROJECT [INHP] - III

Community Development Centre
Bhatera Chouky, Balaghat
M.P. 481 001, India

Phone: +91 7632 248585
Cell : +91 9425822228
E-mail: cdcbgt@gmail.com

Rights with Dignity

Community Development Centre
CDC

सी.डी.सी. संक्षिप्त परिचय

कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर एक पंजीकृत स्वैच्छिक संगठन है जो विभिन्न विकासीय मुद्दों पर बालाघाट, सिवनी और मंडला जिलों में कार्य कर रही है। संस्था शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर कार्य करती है। संस्था द्वारा स्थानीय स्वशासन की ईकाईयों पंचायत और ग्राम सभाओं के सशक्तिकरण पर प्रशिक्षण, जानकारियों और अनुभवों के आदान प्रदान अध्ययन भ्रमण आदि गतिविधियों का संचालन सतत किया जाता है।

संस्था ने ग्रामीण महिलाओं के साथ उनके संगठन निर्माण और आजीविका की सुनिश्चितता की दिशा में बैहर विकासखंड की 6 पंचायतों में उल्लेखनीय कार्य किया है, इन पंचायतों में गठित लगभग 100 स्वयं सहायता समूहों ने मिलकर पलाश महिला संगठन का निर्माण किया है जो कि छोटी छोटी बचतों के माध्यम से अपनी पारिवारिक स्थिति में सुधार पर कार्य कर रही हैं साथ ही महिलाओं की कई सामाजिक समस्याओं पर भी पलाश स्वयं सहायता समूह फेडरेशन हस्तक्षेप करता है।

संस्था मूलतः समाज में स्वैच्छिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का कार्य करती है जिसमें अन्य स्थानीय संस्थाओं के साथ नेटवर्किंग कर विकासीय योजनाओं के कियांवयन में सहयोगी भूमिका निभाती है। संस्था केयर इंडिया के अलावा अन्य संस्थाओं जैसे सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट, इंडियन नेटवर्क ऑफ पाजीटिव पीपल, डेव्हलपमेंट अल्टर्नेटिव्स, समर्थन, कासा और म.प्रदृ वॉलेंट्री हेल्थ एसोसिएशन के साथ अलग अलग मुद्दों पर कार्य करती है।

संस्था के पास अलग अलग विषयों पर दक्ष स्टॉफ है जो ग्रामीण स्तर पर समुदाय के साथ कार्य करने का अनुभव रखते हैं। संस्था का सपना एक ऐसे समाज के निर्माण का है जहॉ प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार प्राप्त हो।

कुपोषण पर महिलाओं के प्रयास

विकासखंड छपारा के गोरखपुर सेक्टर के मंडवा पंचायत के ग्राम सालीवाडा में अमसलाल का परिवार जो गोंड जाति से है निवास करता है। परिवार की आय का स्रोत दैनिक मजदूरी और छोटी सी खेती है, इस परिवार में पहले दो बच्चियों का जन्म पूर्व में हो चुका था। इसके पश्चात इनकी पत्नी रामकुमारी पुनः गर्भवती हुई गर्भावस्था के दौरान ऑगनवाडी की सारी सेवाओं का लाभ लिया एवं स्वास्थ्य एवं पोषण के सारे व्यवहार जैसे 100 आयरन की गोली का सेवन, दो टी.टी. के टीके, पोषण आहार, आराम, आदि व्यवहारों का पालन किया। गर्भावस्था के समय प्रसव पूर्व जॉच से पता नहीं चला था कि जुडवा बच्चे गर्भ में पल रहे है। रामकुमारी ने 21.10.06 को दो जुडवा लडकियों को जन्म दिया इसका प्रसव घर पर ही हुआ जिसे सरोतो बाई प्रशिक्षित दाई के द्वारा कराया गया

जन्म के समय एक बच्ची भारती का वजन 1.800 कि.ग्रा. एव दूसरी सरस्वती का वजन 1.900 कि.ग्रा. था इन्हें जन्म के समय एक घंटे के अंदर स्तनपान कराया गया, 7 दिन तक नहलाया नही, नाल पर कुछ नहीं लगाया गया इस दौरान आंगनवाडी कार्यकर्त्ता के द्वारा प्रतिदिन गृहभेंट देकर समझाईश देते रहा गया कि बच्ची चूंकि तृतीय ग्रेड में कुपोषित पैदा हुई थी इसलिये जल्द से जल्द सुधार आना संभव नहीं था।

आंगनवाडी केंद्र में आयोजित नवाचारों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी

बच्ची के बडे होने के साथ साथ इनका टीकाकरण पूर्ण किया गया इसके बाद जब बच्ची छः माह की हो गई तो ऑगनवाडी केन्द्र पर अन्नप्र. ाशन कर उपरी आहार की शुरूआत करने तथा भोजन में तेल का प्रयोग करने की सलाह दी गई, भोजन की मात्रा का विशेष ध्यान दिया गया । परियोजना अधिकारी श्री एल.के. डेहरिया के द्वारा इन बच्चियों का विशेष ध्यान देने के लिये कार्यकर्ता से कहा गया तथा श्रीमति ताराम पर्यवेक्षक के द्वारा इनको बाल शक्ति योजना से लाभांवित करवाने में सहयोग प्रदान किया गया

इन समस्त प्रयासों के फलस्वरूप सरस्वती एवं भारती के कुपोषण के स्तर में परिवर्तन आ चुका है आज दोनों बच्चियों में पारिवारिक देखभाल से सामान्य ग्रेड में लाने कि दिशा में प्रयास किया जा रहा है। इस तरह के प्रयास अन्य बच्चों के लिया जाये तो निश्चित रूप से सफलता प्राप्त की जा सकती है।